कमतर जमीन पर ज्यादा अन्न उत्पादन की भविष्य में सबसे बड़ी चुनौती

कृषि उत्पादन में जल प्रबंधन की महत्ता विषयक कृषक प्रशिक्षण

गाजीपुर। नेफोर्ड कट्स इंटरनेशनल एवं कृषि विज्ञान केन्द्र गाजीपुर के सहयोग से जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में कृषि उत्पादन में जल प्रबंधन की महत्ता विषयक कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का प्रारम्भ करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक एवं नेफोर्ड निदेशक डा. आर.के.सिंह ने जल की महत्ता के साथ-साथ भावी समस्याओं का जिक्र करते हुए किसानों को आगाह कि भविष्य में सबसे बड़ी चुनौती कम पानी, कम ऊर्जा एवं रसायनों के कम प्रयोग से कमतर उपलब्ध होती जमीन पर ज्यादा से ज्यादा अन्न उत्पादन की है। किसानों को इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहने की उन्होंने जरूरत बतायी। इस अवसर पर वक्ताओं ने किसानों को जल की महत्ता के प्रति जागरूक करने के साथ कृषि उत्पादन में उन्नत जल प्रबंधन के उपायों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि आज हर तरफ जलवायु परिवर्तन की बात चल रही है और उसके दुष्परिणाम कम करने के उपाय तलाशे जा रहे हैं। आंकड़े बताते है कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में आयी अनिश्चितता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में कृषि उत्पादन के सतत एवं स्थायी विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों पानी, ऊर्जा, मिट्टी का बेहिसाब दोहन भविष्य के लिए खतरा साबित हो सकता है। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न, पानी, ऊर्जा तीनों एक दूसरे से जुड़े हैं, अत: किसी एक में जब किसी प्रकार का परिवर्तन होता है तो शेष दोनों संसाधनों पर उसका प्रभाव पड़ना लाजमी है। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन के लिए पानी और ऊर्जा दोनों की जरूरत पड़ती है, जबकि पानी निकालने एवं उसके उपयोग के लिए ऊर्जा की जरूरत पड़ती है। इसी तरह ऊर्जा पैदा करने के लिए पानी की जरूरत पड़ती है। अत: खाद्यान्न के सतत एवं स्थायी विकास के लिए पानी और ऊर्जा का उचित प्रबंधन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण आस्ट्रेलियन सरकार की सहायता से जयपुर स्थित कट्स इंटरनेशनल संस्थान द्वारा चलायी गयी दक्षिण एशिया में सतत एवं स्थायी विकास हेतु खाद्यान्न जल एवं ऊर्जा संरक्षण के लिए आपसी सहयोग नामक परियोजना का हिस्सा है। इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु भारत, नेपाल, भुटान, बंगलादेश, पाकिस्तान में कुल आठ गैर सरकारी संस्थान चयनित किये गये हैं, जिसमें एक संस्थान नेफोर्ड लखनऊ भी है। इस संस्थान की जिम्मेदारी गंगा बेसिन के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों की है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र के लोगों खासकर किसानों को खाद्यान्न उत्पादन में पानी एवं ऊर्जा का दक्षतापूर्ण उपयोग की जानकारी देने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन अवरोधी प्रजातियों तथा तकनीकों का विकास एवं प्रचार-प्रसार करना है। ताकि अन्य उत्पादन में सतत और स्थायी विकास हो सके। प्रशिक्षण में जल संसाधन एवं प्रबंधन निम्न गुणवतापूर्ण जल से उन्नति कृषि, सूक्ष्म सिंचाई, विधियां, लेजर समतलक द्वारा जल उपयोग दक्षता में वृद्धि, धान की सीधी बुआई एवं जीरोटीलेज, एकीकृत खर-पतवार प्रबंधन आदि विषयों पर चर्चा की गयी। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शस्य वैज्ञानिक प्रो. उदयप्रताप सिंह ने किसानों को इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहने की जरूरत बतायी। केवीके के समन्वयक डा. दिनेश सिंह के नेतृत्व में आयोजित कृषक प्रशिक्षण में जनपद के लगभग दो सौ किसानों ने भाग लिया।

केवीके के तत्वावधान में कृषि उत्पादन में जल प्रबंधन की महत्ता विषयक कृषक प्रशिक्षण को संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक। छाया-आज